२० से २६ जनवरी १९८५ □ मूल्य ४.०० रु.

धर्मयुग

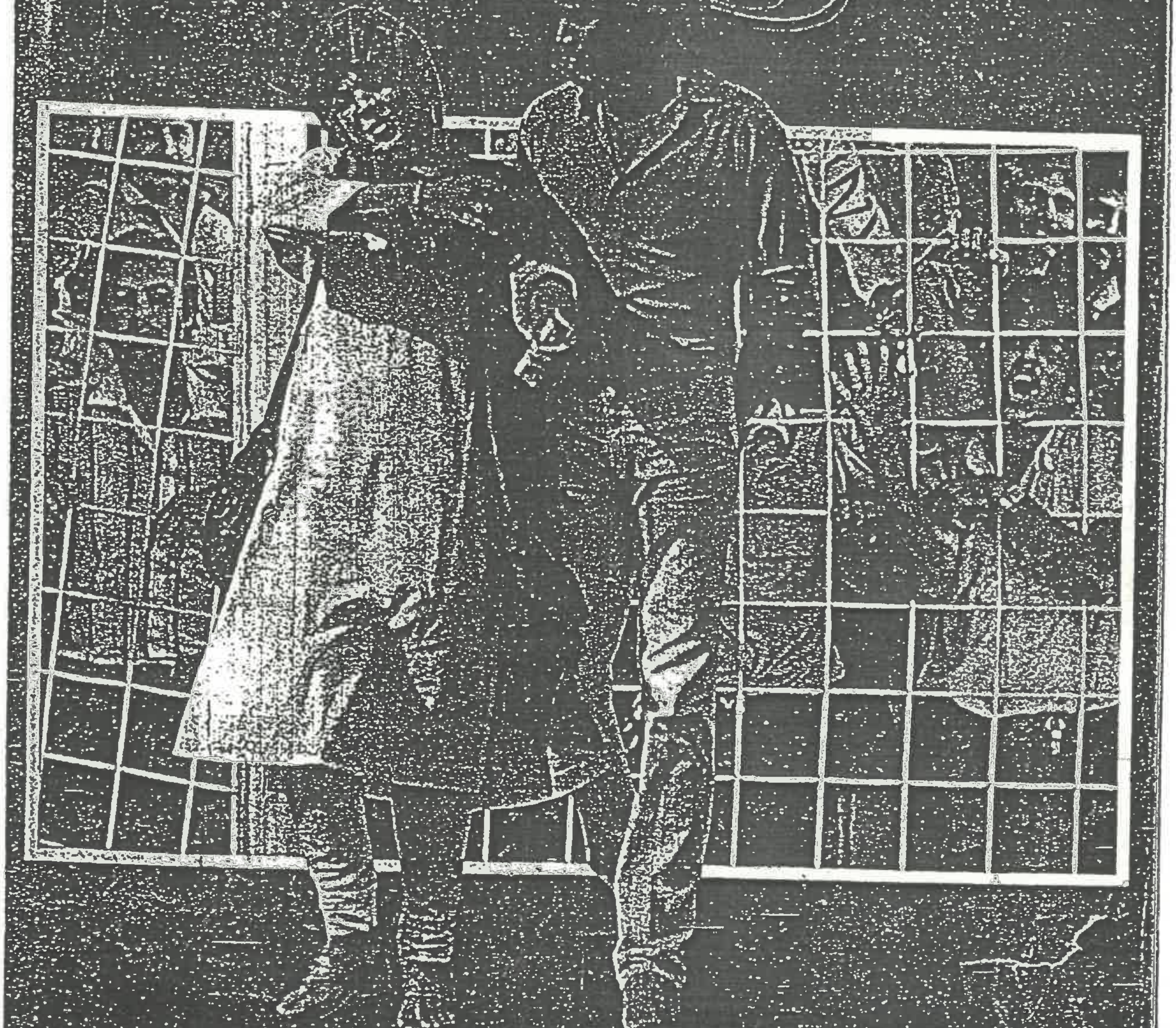

क्रिकेट?...कपिलदेव?...कसौटी?

राजनीति चुनावोपरांत □ पाकिस्तान, पिस्तौल और विमान-अपहरण

आयुर्वेद में कैंसर की चिकित्सा

क्या एक भारतीय वैद्य ने कैंसर पर विजय पा ली है?

☐ अशोक कुमार सक्सेना

कैंसर पर विजय— चूंकि यह बात सार्वजनिक हित की है, इसलिए हम संबद्ध लेख छाप रहे हैं. मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सरकारों को चाहिए कि वे कैंसर-उपचार की इस पद्धति की प्रामाणिकता की जांच करवायें और जन-कल्याण में अपना सहयोग दें.

नंदलाल तिवारी

आज समस्त विश्व में कैंसर-जैसे घातक व असाध्य रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए कारगर औषधि की खोज की जा रही है, परंतु दुर्भाग्यवश अभी तक वैज्ञानिकों को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चल पाया है, जिससे इस भीषण रोग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सके. विश्व के सबसे उन्नत राष्ट्र— अमरीका व सोवियत संघ अपने-अपने शोध-संस्थानों में करोड़ों का खर्च कर रहे हैं, जिससे ऐसी कोई दवा या विधि खोजी जा सके, जो कैंसर पर विजय दिलाने के लिए पूरी तरह सुरक्षित व कारगर हो. आज विश्व में उपचार के जो साधन उपलब्ध हैं, उनसे मरीज को कुछ तात्कालिक लाभ भले ही मिल जाये, परंतु कालांतर में रोग पुनः अपने भीषण काल-रूपी जबड़े में मरीज को कसना शुरू कर देता है. इस मर्ज की भीषण अंधकारमय कालरात्रि में आशा की एक किरण प्रस्फुटित हुई है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में कैंसर पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी.

इस रोग के मरीजों को जीवनदान देने में आशा की यह चमक गोंदिया (महाराष्ट्र) नगर में चमकी है, जहां के एक वैद्यराज, नंदलाल तिवारी ने अपने अथक परिश्रम द्वारा इस भीषण रोग से मुकाबला करने के लिए एक ऐसी कारगर व चमत्कारिक दवा की खोज की है, जो मात्र इस रोग को काबू में ही नहीं, बल्कि उसे जड़ से समाप्त करने में भी पूरी तरह से सक्षम है.

नंदलाल तिवारी राजस्थान के निंबड़ी-कलां, जिला नागौर के मूल निवासी हैं. विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की खोज करने का शौक उन्हें प्रारंभ से ही रहा है. इसी दौरान उनके एक मित्र की मौत कैंसर से हुई थी, जिसके फलस्वरूप वे इतने विचलित हुए कि उन्होंने अपना सारा ध्यान कैंसर की दवा की खोज में लगा दिया. ईश्वर की कृपा से उनका परिश्रम रंग लाया तथा खोज सफल रही. दवा की खोज के उपरांत, मरीजों को दवा देने के पूर्व, वे इस बात के प्रति आश्वस्त हो जाना चाहते थे कि कहीं यह दवा मरीजों का कुछ नुकसान तो नहीं करेगी! इसके लिए उन्होंने स्वतः ही कुछ दिनों तक दवा का सेवन करके देखा तथा पूरी तरह आश्वस्त हो जाने के बाद ही मरीजों को दवा देना प्रारंभ किया.

रोगमुक्त हुए मरीज

सर्वप्रथम तिवारी जी ने अपनी दवा जीभ व रक्त-कैंसर से पीड़ित मरीज को दी. परंतु इसी बीच उनकी इस खोज को एक नया आयाम श्रीमती ताराबाई चौरसिया के केस से मिला. गोंदिया नगर के एक प्रसिद्ध वकील एन. एल. चौरसिया की माता श्रीमती ताराबाई चौरसिया अन्न-नलिका के कैंसर से पीड़ित थीं. उनका पर्याप्त इलाज करवाया गया, परंतु उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ. उन्हें भोजन आदि ग्रहण करने में भी काफी कठिनाई होती थी. अंत में चौरसिया जी ने तिवारी जी से संपर्क साधा. तिवारी जी ने उन्हें दवा सेवन करने को दी. चौथे दिन से ही दवा का प्रभाव दिखलाई देने लगा. श्रीमती चौरसिया ने दवा का सेवन लगभग छह माह तक किया. आज वे कैंसर से पूरी तरह मुक्त हो चुकी हैं तथा एक स्वस्थ व्यक्ति की भांति आहार ग्रहण करती हैं.

दूसरा उदाहरण भी गोंदिया के एक अन्य वकील मनोहर बापट के ५२ वर्षीय एटर्नी अर्जुन सिंह का है. उन्हें भी अन्न-नलिका का कैंसर था. चारों तरफ से निराश हो कर उन्होंने तिवारी जी की दवा का सेवन किया तथा आज वे कैंसर से मुक्त हो चुके हैं.

गोंदिया के समीप के एक ग्राम—टांडा की श्रीमती बायजाबाई रहांगडाले का केस तो बड़ा ही आश्चर्यजनक है. बायजाबाई स्तन के कैंसर से पीड़ित थीं. वे इतनी कमजोर हो चुकी थीं कि यह समझा जा रहा था कि अब वे कुछ ही दिनों की मेहमान हैं. अंतिम समय जान कर सभी रिश्तेदारों व हितचिंतकों ने अपनी-अपनी सहानुभूति व्यक्त की तथा उनके पुत्रों ने ब्राह्मणों को भोजन भी करा दिया. इसी बीच उनके एक पुत्र जे. बी. रहांगडाले को, जो शिक्षक हैं, तिवारी जी की दवा का पता चला. श्रीमती बायजाबाई को मरणासन्न अवस्था में ही दवा दी गयी. दो ही दिनों बाद उनकी आंखें खुल गयीं. स्तन पर उठे हुए जख्म सूखने लगे तथा वे भोजन लेने लगीं. दवा के मात्र पंद्रह दिनों के सेवन से वे इतनी स्वस्थ हो गयीं कि निकट के एक रिश्तेदार की शादी में भी सम्मिलित होने चली गयीं.

इसी प्रकार का एक उदाहरण गुजरात (एहवा) के एक डॉक्टर एम. एस. परमार के छोटे भाई योगेश का है. २८ वर्षीय योगेश रक्त-कैंसर से पीड़ित था तथा बंबई के टाटा कैंसर रिसर्च संस्थान द्वारा भी उसे जवाब मिल चुका था. योगेश की हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसके नाक, कान, मुंह से रक्त निकलना शुरू हो गया था. इसी बीच डॉ. परमार के एक कंपाउंडर को किसी तरह तिवारी जी की दवा का पता चला. उसने डॉ. परमार को यह सलाह दी कि वे इस दवा का भी सेवन करवा कर देखें. डॉ. परमार दवा लेने गुजरात से गोंदिया आये. योगेश को उतनी नाजुक अवस्था में ही दवा दी गयी. दवा ने ब्रह्मास्त्र-जैसा काम किया. दवा के सेवन के एक सप्ताह के अंदर ही योगेश का रक्तस्राव बंद हो गया. उसके खून की जांच करने से पता चला कि उसके रक्त में मौजूद कैंसर के सेल्स क्रमशः घटते जा रहे हैं. आज योगेश कैंसर से पूरी तरह मुक्त हो चुका है.

नैनपुर (मध्यप्रदेश) के डॉक्टर प्रकाशचंद बासल के पिता प्रेमचंद को भी अन्न-नलिका का कैंसर था. बंबई के टाटा अस्पताल के डॉक्टरों ने 'जिंदा रहने की कोई उम्मीद नहीं है' कह कर उन्हें वापस भेज दिया था. तिवारी जी की दवा से उन्हें तीन माह में ही ९० प्रतिशत फायदा हो गया. आज वे भी पूरी तरह कैंसर से मुक्त हो चुके हैं.

ऐसे सैकड़ों उदाहरण तिवारी जी के पास हैं. उनके पास दवा लेने बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, बंगाल, गुजरात, उड़ीसा, राजस्थान आदि स्थानों से लोग आ रहे हैं. दवा के सेवन से सभी को लाभ हो रहा है. तिवारी जी ने मुझे बताया कि उनकी दवा हर प्रकार के कैंसर पर पूरी तरह कारगर है. दवा के सेवन से फेफड़े, स्तन, गर्भाशय, गले, जीभ यानी शरीर के किसी भी भाग का कैंसर ठीक हो सकता है.

ट्यूमर पर भी इस दवा का प्रयोग पूरी तरह सफल रहा है. दवा के प्रयोग से ट्यूमर फोड़े की तरह पक कर फूटता है तथा उसमें से मवाद निकलना शुरू होता है. मवाद निकलने के बाद घाव सूखने लगता है तथा सूख कर मरीज की चमड़ी से मिल जाता है. प्रारंभिक स्तर का कैंसर तीन माह में तथा फैला-हुआ कैंसर छह माह में पूरी तरह ठीक हो सकता है. सावधानी के लिए मरीज को उतने ही दिन दवा खाने की

• शेष पृष्ठ ५८ पर→

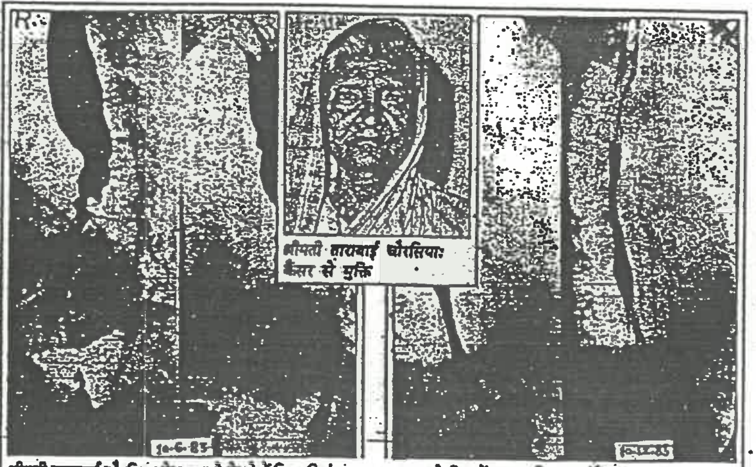

श्रीमती ताराबाई चौरसिया के एक्स-रे के दोनों चित्र. दिनांक १०.६.८३ वाले चित्र में अन्न-नलिका का कैंसर स्पष्ट दीख रहा है. १०.१२.८३ को लिये गये एक्स-रे में कैंसर का प्रभाव पूरी तरह से गायब है

आयुर्वेद में कैंसर की चिकित्सा

क्या एक भारतीय वैद्य ने कैंसर पर विजय पा ली है?

☐ अशोक कुमार सक्सेना

कैंसर पर विजय— चूंकि यह बात सार्वजनिक हित की है, इसलिए हम संबद्ध लेख छाप रहे हैं. मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सरकारों को चाहिए कि वे कैंसर-उपचार की इस पद्धति की प्रामाणिकता की जांच करवायें और जन-कल्याण में अपना सहयोग दें.

नंदलाल तिवारी

आज समस्त विश्व में कैंसर-जैसे घातक व असाध्य रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए कारगर औषधि की खोज की जा रही है, परंतु दुर्भाग्यवश अभी तक वैज्ञानिकों को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चल पाया है, जिससे इस भीषण रोग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सके. विश्व के सभी उन्नत राष्ट्र— अमरीका व सोवियत संघ अपने-अपने शोध-संस्थानों में करोड़ों का खर्च कर रहे हैं, जिससे ऐसी कोई दवा या विधि खोजी जा सके, जो कैंसर पर विजय दिलाने के लिए पूरी तरह सुरक्षित व कारगर हो. आज विश्व में उपचार के जो साधन उपलब्ध हैं, उनसे मरीज को कुछ तात्कालिक लाभ भले ही मिल जायें, परंतु कालांतर में रोग पुनः अपने भीषण काल-रूपी जबड़े में मरीज को कसना शुरू कर देता है. इस रोग की भीषण अंधकारमय कालरात्रि में आशा की एक किरण प्रस्फुटित हुई है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में कैंसर पर विजय प्राप्त कर ली जायेगी.

इस रोग के मरीजों को जीवनदान देने में आशा की यह चमक गोंदिया (महाराष्ट्र) नगर में चमकी है, जहां के एक वैद्यराज, नंदलाल तिवारी ने अपने अथक परिश्रम द्वारा इस भीषण रोग से मुकाबला करने के लिए एक ऐसी कारगर व चमत्कारिक दवा की खोज की है, जो मात्र इस रोग को काबू में ही नहीं, बल्कि उसे जड़ से समाप्त करने में भी पूरी तरह से सक्षम है.

नंदलाल तिवारी राजस्थान के निंबड़ी-कलां, जिला नागौर के मूल निवासी हैं. विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की खोज करने का शौक उन्हें प्रारंभ से ही रहा है. इसी दौरान उनके एक मित्र की मौत कैंसर से हुई थी, जिसके फलस्वरूप वे इतने विचलित हुए कि उन्होंने अपना सारा ध्यान कैंसर की दवा की खोज में लगा दिया. ईश्वर की कृपा से उनका परिश्रम रंग लाया तथा खोज सफल रही. दवा की खोज के उपरांत, मरीजों को दवा देने के पूर्व, वे इस बात के प्रति आश्वस्त हो जाना चाहते थे कि कहीं यह दवा मरीजों का कुछ नुकसान तो नहीं करेगी! इसके लिए उन्होंने स्वतः ही कुछ दिनों तक दवा का सेवन करके देखा तथा पूरी तरह आश्वस्त हो जाने के बाद ही मरीजों को दवा देना प्रारंभ किया.

रोगमुक्त हुए मरीज

सर्वप्रथम तिवारी जी ने अपनी दवा जीभ व रक्त-कैंसर से पीड़ित मरीज को दी. परंतु इसी बीच उनकी इस खोज को एक नया आयाम श्रीमती ताराबाई चौरसिया के केस से मिला. गोंदिया नगर के एक प्रसिद्ध वकील एन. एल. चौरसिया की माता श्रीमती ताराबाई चौरसिया अन्न-नलिका के कैंसर से पीड़ित थीं. उनका पर्याप्त इलाज करवाया गया, परंतु उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ. उन्हें भोजन आदि ग्रहण करने में भी काफी कठिनाई होती थी. अंत में चौरसिया जी ने तिवारी जी से संपर्क साधा. तिवारी जी ने उन्हें दवा सेवन करने को दी. चौथे दिन से ही दवा का प्रभाव दिखलाई देने लगा. श्रीमती चौरसिया ने दवा का सेवन लगभग छह माह तक किया. आज वे कैंसर से पूरी तरह मुक्त हो चुकी हैं तथा एक स्वस्थ व्यक्ति की भांति आहार ग्रहण करती हैं.

दूसरा उदाहरण भी गोंदिया के एक अन्य वकील मनोहर बागट के ५२ वर्षीय एटर्नी अर्जुन सिंह का है. उन्हें भी अन्न-नलिका का कैंसर था. चारों तरफ से निराश हो कर उन्होंने तिवारी जी की दवा का सेवन किया तथा आज वे कैंसर से मुक्त हो चुके हैं.

गोंदिया के समीप के एक ग्राम—टेढा की श्रीमती बायजाबाई रहांगडाले का केस तो बड़ा ही आश्चर्यजनक है. बायजाबाई स्तन के कैंसर से पीड़ित थीं. वे इतनी कमजोर हो चुकी थीं कि यह समझा जा रहा था कि अब वे कुछ ही दिनों की मेहमान हैं. अंतिम समय जान कर सभी रिश्तेदारों व हितचिंतकों ने अपनी-अपनी सहानुभूति व्यक्त की तथा उनके पुत्रों ने ब्राह्मणों को गोदान भी कर दिया. इसी बीच उनके एक पुत्र जे. बी. रहांगडाले को, जो शिक्षक हैं, तिवारी जी की दवा का पता चला. श्रीमती बायजाबाई को मरनासन्न अवस्था में ही दवा दी गयी. दो ही दिनों बाद उनकी आंखें खुल गयीं. स्तन पर उठे हुए जख्म सूखने लगे तथा वे भोजन लेने लगीं. दवा के मात्र पंद्रह दिनों के सेवन से वे इतनी स्वस्थ हो गयीं कि निकट के एक रिश्तेदार की शादी में भी सम्मिलित होने चली गयीं.

इसी प्रकार का एक उदाहरण गुजरात (एहवा) के एक डॉक्टर एम. एस. परमार के छोटे भाई योगेश का है. २८ वर्षीय योगेश रक्त-कैंसर से पीड़ित था तथा बंबई के टाटा कैंसर रिसर्च संस्थान द्वारा भी उसे जवाब मिल चुका था. योगेश की हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसके नाक, कान, मुंह से रक्त निकलना शुरू हो गया था. इसी बीच डॉ. परमार के एक कंपाउंडर को किसी तरह तिवारी जी की दवा का पता चला. उसने डॉ. परमार को यह सलाह दी कि वे इस दवा का भी सेवन करवा कर देखें. डॉ. परमार दवा लेने गुजरात से गोंदिया आये. योगेश को उतनी नाजुक अवस्था में ही दवा दी गयी. दवा ने ब्रह्मास्त्र-जैसा काम किया. दवा के सेवन के एक सप्ताह के अंदर ही योगेश का रक्तस्राव बंद हो गया. उसके खून की जांच करने से पता चला कि उसके रक्त में मौजूद कैंसर के सेल्स क्रमशः घटते जा रहे हैं. आज योगेश कैंसर से पूरी तरह मुक्त हो चुका है.

नैनपुर (मध्यप्रदेश) के डॉक्टर प्रकाशचंद वासल के पिता परमचंद को भी अन्न-नलिका का कैंसर था. बंबई के टाटा अस्पताल के डॉक्टरों ने 'जिंदा रहने की कोई उम्मीद नहीं है' कह कर उन्हें वापस भेज दिया था. तिवारी जी की दवा से उन्हें तीन माह में ही ९० प्रतिशत फायदा हो गया. आज वे भी पूरी तरह कैंसर से मुक्त हो चुके हैं.

ऐसे सैकड़ों उदाहरण तिवारी जी के पास हैं. उनके पास दवा लेने बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, बंगाल, गुजरात, उड़ीसा, राजस्थान आदि स्थानों से लोग आ रहे हैं. दवा के सेवन से सभी को लाभ हो रहा है. तिवारी जी ने मुझे बताया कि उनकी दवा हर प्रकार के कैंसर पर पूरी तरह कारगर है. दवा के सेवन से फेफड़े, स्तन, गर्भाशय, गले, जीभ, यानी शरीर के किसी भी भाग का कैंसर ठीक हो सकता है.

ट्यूमर पर भी इस दवा का प्रयोग पूरी तरह सफल रहा है. दवा के प्रयोग से ट्यूमर फोड़े की तरह पक कर फूटता है तथा उसमें से मवाद निकलना शुरू होता है. मवाद निकलने के बाद घाव सूखने लगता है तथा सूख कर मरीज की चमड़ी से मिल जाता है. प्रारंभिक स्तर का कैंसर तीन माह में तथा फैला हुआ कैंसर छह माह में पूरी तरह ठीक हो सकता है. सावधानी के लिए मरीज को उतने ही दिन दवा खाने की

● शेष पृष्ठ ५८ पर→

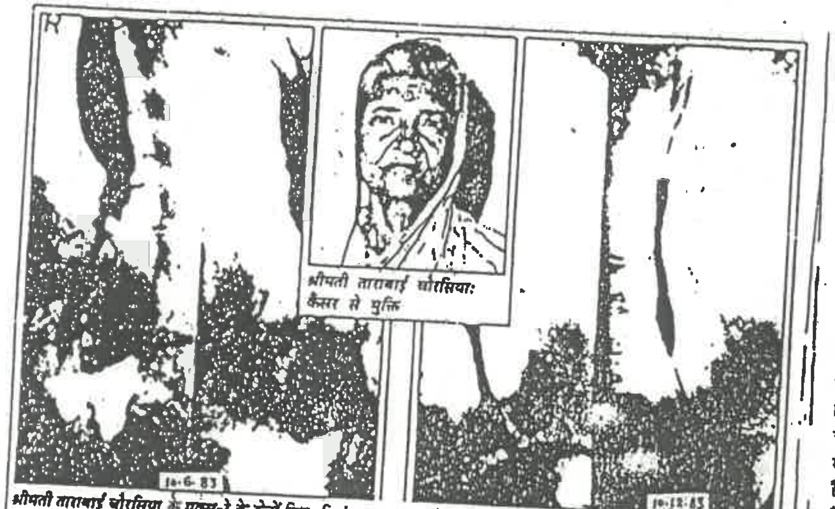

श्रीमती ताराबाई चौरसिया के एक्स-रे के दोनों चित्र. दिनांक १०.६.८३ वाले चित्र में अन्न-नलिका का कैंसर स्पष्ट दीख रहा है. १०.१२.८३ को लिये गये एक्स-रे में कैंसर का प्रभाव पूरी तरह से गायब है

करा एक भारतीय वैद्य ने...

→● पृष्ठ ४४ का शेष

सलाह दी जाती है, ताकि रोग के दोबारा होने की कतई संभावना न रहे. दवा का सेवन शहद के साथ दिन में तीन बार भोजन के बाद करना होता है. दवा लेने के दौरान पेट का साफ रहना आवश्यक है. खट्टी चीजों के सेवन की सख्त मनाही है.

बायप्सी की आवश्यकता नहीं

प्रारंभिक स्टेज पर कैंसर का पता ही नहीं चलता और जब पता चलता है, तब तक वह लाइलाज हो चुका होता है. फिलहाल कैंसर का पता लगाने के लिए बायप्सी की जाती है, जिसमें शरीर के कैंसर-संभावित भाग के छोटे से अंश को काट कर विभिन्न परीक्षणों द्वारा यह देखा जाता है. कि उसमें कैंसरग्रस्त कोशिकाएं है या नहीं। इस दवा द्वारा बायप्सी करवाने के झंझट से ही मुक्ति मिल जाती है. मरीज को चार दिनों तक दवा खाने की सलाह दी जाती है. औषधि-सेवन के चौथे दिन से ही कैंसरग्रस्त स्थान पर एक विशेष प्रकार की खुजली या अंदर-ही-अंदर एक टनक-सी महसूस होने लगती है. मरीज को यदि ऐसी अनुभूति हो, तो जान लें कि कैंसर ही है. यदि ऐसा न लगे, तो समझिए कैंसर नहीं है.

तिवारी जी के अनुसार, यह धारणा गलत है कि कैंसर असाध्य है. आज से कुछ दशक पूर्व टी. बी. के बारे में भी यही समझा जाता था, परंतु जब से पेनिसिलिन का आविष्कार हुआ है, तब से टी. बी. एक सामान्य सा रोग हो चुका है. कैंसर भी एक ऐसा ही रोग है, जिसे असाध्य इसलिए समझा जा रहा है, क्योंकि इसकी कोई कारगर दवा नहीं निकली है. तिवारी जी ने बताया कि कैंसर एक सामान्य सा रोग है तथा इसकी चिकित्सा टी. बी. से भी सरल है.

उपचार पद्धति

रोगी यदि तिवारी जी के पास आने की स्थिति में हो, तभी उसे बुलाया जाता है, अन्यथा बीमार के परिवार के किसी व्यक्ति को मरीज के रोग-विषयक कागजों को ले कर आना पड़ता है. सर्वप्रथम दवा एक या दो माह की दी जाती है तथा फायदा होने पर पुनः बुलाया जाता है.

अपनी दवा को मान्यता दिलाने के लिए नंदलाल तिवारी समाजसेवी संस्थाओं तथा सरकार से पत्र-व्यवहार कर रहे है, पर उन्होंने बड़े ही दुख से बताया कि उन्हें पग-पग पर लालफीताशाही का सामना करना पड़ रहा है. उन्होंने कुछ निराश हो कर बतलाया कि यदि उनकी दवा को भारत में मान्यता नहीं मिली, तो वे विदेश जाने के लिए बाध्य हो जायेंगे. उनका इरादा संपूर्ण मानव जाति की सेवा करने का है. लाखों-करोड़ों कैंसर-पीड़ित मरीजों की जान बचाना चाहते है. आज आवश्यकता है कि सरकार व समाजसेवी संस्थाएं बारीकी से तिवारी जी की दवा तथा उनके द्वारा ठीक किये गये मरीजों की जांच करें तथा तिवारी जी को विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान करें, ताकि दवा का पूर्ण परिष्कृत रूप आम जनता को सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हो सके.

दवा लेने आने से पूर्व तिवारी जी से पत्र-व्यवहार करके यह पता लगा लेना चाहिए कि वे कहां उपलब्ध होंगे। वे भारत में माह में तीन जगह पर मरीजों को दवा देते है—गोंदिया, कलकत्ता तथा जयपुर. गोंदिया का उनका पता है— नंदलाल तिवारी
~~सुनील मेडिकल स्टोर्स~~
~~दुर्गा चौक, कुम्हा लाइन~~
~~गोंदिया—४४१६०१~~
फोन : २१०४ (आवास), २५१२ (कार्यालय)

9/13 मालवीया
नगर जयपुर (राज)
फोन-79385

तिवारी जी की दवा से गरीब व मध्यवर्गीय व्यक्ति भी लाभ उठा सकते हैं. ■■■